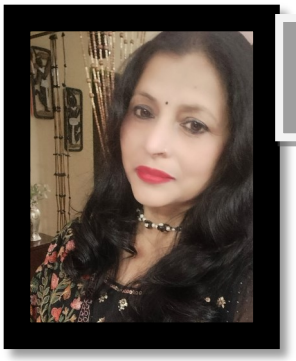

चैताली दीक्षित

शिलांग

इंसान या धर्म

घर में पुनर्निर्माण एवं सफाई का कार्य चल रहा है। कल ही तकरीबन एक 18-19 साल के लड़के ने सफाई का काम शुरू किया। बहुत सारे मजदूर लगे हुए हैं पर सब अपनी सहूलियत के हिसाब से काम पर आते हैं। ज्यादातर बीच बीच में बिना बताए बैठ जाते हैं और फोन करने पर बहुत सारी मजबूरियां गिना देते हैं। घर में काम लगने के कारण ढंग से सोने खाने की भी समस्या हो ही जाती है। उसी जगह पर फर्श की सफाई करने वाला लड़का राजू अपने नियत समय पर आ रहा है और पूरी ईमानदारी से सफाई का काम भी करने में लगा हुआ था। समय समय पर मैं उसे चाय पानी नाश्ता दे दे रही थी। राजू को सफाई के लिए कुछ विशेष सामानों की जरूरत थी, मेरे पतिदेव उसे उसके जरूरत के मुताबिक सामान दिलवाने अपने चिरपरिचित हार्डवेयर शॉप में ले के गए। " राजू तुम्हे जिन सामानों की जरूरत है वो बता दो", मेरे पति ने राजू की तरफ देखते हुए कहा। राजू ने दुकानदार को जरूरत बताई जिसमे एक ब्रश बहुत जरूरी था नही तो एसिड राजू के हाथों को नुकसान पहुंचा सकता था। जैसे ही राजू ने उस ब्रश के बारे में दुकानदार को बताया, दुकानदार ने घूरते हुए राजू को देखा और डपटते हुए कहा," रजाई गद्दा भी मंगवा दें क्या? आराम करने आए हो या काम करने? हाथ खराब होने की इतनी चिंता है तो काम क्यों कर रहे हो? राजू हैरानी से दुकानदार की तरफ देखता रह गया। जब राजू सामान को लेकर चला गया तब मेरे पतिदेव से रहा न गया, उन्होंने पूछा की, "बाबू साहेब क्यों इतना गर्म हो गए आप उसके ऊपर"? एक अजीब सी वितृष्णा के साथ बाबू साहेब ने जवाब दिया," अरे प्रोफेसर साहेब ये एक धर्म विशेष का है, देख कर ही गुस्सा आता है"। मेरे पतिदेव ने कहा, " बाबू साहेब इंसानियत से बड़ा कोई धर्म नही"। बाबू साहेब ने तुरंत जवाब दिया," अरे प्रोफेसर साहेब आप तो सालों से बाहर बसे हैं आपको नही समझ आएगा। तब तक पैसे का भुगतान हो चुका था इसलिए मेरे पतिदेव घर की ओर चल पड़े। घर आकर जब उन्होंने मुझे ये बताया तो मुझे तकलीफ के साथ गुस्सा भी आया पर मैं ये सोचने को विवश हो गई की इंसानियत और भाईचारा क्या समाज से विलुप्त होता जा रहा है? क्या इंसान से प्यार या नफरत का पैमाना उसके अच्छे बुरे कर्म हैं या धर्म?